!!भगवान विष्णु जी की आरती!!

ओम जय जगदीश हरे, स्वामी! जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट, दासजनो के संकट, क्षण में दूर करे॥
ओम जय जगदीश हरे...
जो ध्यावै फल पावै, दुख बिनसे मन का।
सुख-संपत्ति घर आवै, कष्ट मिटे तन का॥
ओम जय जगदीश हरे ...
तुम करुणा के सागर तुम पालनकर्ता।
मैं मूरख खल कामी, कृपा कृपा करो भर्ता॥
ओम जय जगदीश हरे ...
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करू जिसकी॥
ओम जय जगदीश हरे ...
तुम पूरन परमात्मा, तुम अंतरयामी।
पारब्रह्म परेमश्वर, तुम सबके स्वामी॥
ओम जय जगदीश हरे ...
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय ! तुमको मैं कुमति॥
ओम जय जगदीश हरे ...
दीनबंधु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे॥
ओम जय जगदीश हरे ...
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा॥
ओम जय जगदीश हरे ...
तन-मन-धन और संपत्ति, सब कुछ है तेरा।
तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा॥
ओम जय जगदीश हरे ...
जगदीश्वरजी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावे॥
ओम जय जगदीश हरे ...

और भी आरती व चालीसा देखने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें:

https://bhaktimargdarshan.com/

हम आशा करते हैं कि यह सामग्री आपके लिए उपयोगी रही होगी।
अगर आपको यह पसंद आई हो, तो इसे अपने परिवार और मित्रों के साथ जरूर साझा करें।

Bhakti Margdarshan

Bhakti Margdarshan
SPIRITUAL JOURNEY